सतिगुर मूरत

(निहकलंक हरि शब्द भंडार विच्चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

☆ ☆ ☆ ☆ ☆
☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सतिगुर किरपा साची मूरत, रूप रंग रेख बाहर नज़र किसे ना आईआ। गुर का नाद अगम्मी तूरत, तुरीआ तों बाहर समझाईआ। जोती जाता पुरख बिधाता जिस नूं बख्शे आपणा नूरत, नूर नुराना नज़री आईआ। झगड़ा मेटे मूर्ख मूड़त, हउमे हंगता दए गवाईआ। सतिगुर नूं सदा गुरसिखां दी ज़रूरत, भगवान भगत लए प्रगटाईआ । जिन्नां दे काया मन्दर आपणे प्रेम दी करे महूरत, मुरदिआं आपणा रंग रंगाईआ। पन्ध मुका के नेड़े दूरा, घर स्वामी मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर मूरत अनभव दृष्टी विच्च समझाईआ।

सतिगुर मूरत अगम्म अथाह, कथनी कथ सके ना राईआ। जो मालक ख़ालक दाता बेपरवाह, बेऐब प्रवरदिगार इक्क अखवाईआ। जिस दी सिफ्तां वाली सारे करन सलाह, महिंमा विच्च वडयाईआ। रागाँ नादां विच्च रहे गा, धुनां विच्च शब्द शनवाईआ। उह आत्म दा मलाह, बेपरवाह वड खुदाईआ। जिस नूं पैगम्बरां किहा अलाह, आलमीन इक्क अखवाईआ। सो ब्रह्म विद्या ब्रह्म वेता ब्रह्म ज्ञान बिनां अक्खरां तों दए समझा, लिखण पढ़न दी लोड़ रहे ना राईआ। घर दीआ बाती कमलापाती कर रुशना, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। बुद्धि तों परे पर्दा दए चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर दा मालक दया कमाईआ।

सतिगुर मूरत अगम्मी धार, जगत नेत्र वेखण कोई ना पाईआ । जिस जन उप्पर किरपा करे आप निरँकार, निराकार आपणा भेव खुल्हाईआ। अन्तर आत्म परमात्म हो के करे प्यार, प्रेमी प्रीतम आपणी वंड वंडाईआ। बिना बुद्धि तों सुरत विच्च सुरती दा दए ज्ञान, अनदृष्ट हो के आपणा पर्दा लाहीआ। संदेसा सुणावे बिनां कान, सरोतयां दी लोड़ रहे ना राईआ। काया काअबा धुर दा मन्दर कर परवान, परम पुरख आपणा पर्दा दए चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म निझ घर वासी कराए हक़ पहचान, बेपहचान परदा दए चुकाईआ। एहो सतिगुर शब्द शब्द सतिगुरू दा ज्ञान, जिस ज्ञान नूं सारे शास्त्र ग्रन्थ रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग रंगाईआ।

सतिगुर मूरत जो ध्यान धरे अंदर धरना, धरन धरत धवल धौल मिले वडयाईआ । पुरख अकाल दी मिले सरना, सरनगत अवर ना कोई जणाईआ। मंज़ल हक़ हकीकी चढ़ना, जिथ्थे मिले महिबूब धुर दा माहीआ। ना उथ्थे जम्मणा ना उथ्थे मरना, मर जीवत खेल ना कोई खिलाईआ। ना कोई भन्नणा ना कोई घड़ना, घड़न भन्नणहार देवे माण वडयाईआ। जिस ने सतिगुर शब्द दा बिना अक्खरां तों अक्खर पढ़ना, जगत विद्या दा लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा भेव आप चुकाईआ।

सतिगुर मूरत जगत नहीं धारा, वेख वेख ना कोई समझाईआ । जिस दा खेल अगम्म अगोचर अगम्म अपारा, पारब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। जिस नूं नानक निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण गाया तूं ही मेरा साहिब दातारा, जिस दी सतार जगत विच्च हिलाईआ। उह भेव अभेदा खोल्हे खोल्हणहारा, अनभव दृष्टी तों बाहर दए समझाईआ। सतिगुर सूरत सतिगुर दी धार सतिगुर दा प्यार सतिगुर सति होए उजिआरा, नूर नुराना डगमगाईआ। जगत विद्या जगत वाशना जगत व्याखया पढ़ पढ़ थक्का संसारा, संसार नूं संसारी भण्डारी सिँघारी तिन्ने रहे चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, धुर दा मालक ੴइक अखवाईआ।

सतिगुर मूरत जो जन धरदा, मन तों परे ध्यान लगाईआ। उह शब्द सतिगुर सतिगुर शब्द आपणे आप नूं वरदा, मालक इक्को नज़री आईआ। दीन दुनी विच्च ना डरदा, भय भाउ दा लेखा जाए मुकाईआ। सचखण्ड दवारे घर साचे सच सच हो वड़दा, दूजा गृह नज़र कोई ना आईआ। उथे ना कोई शास्त्र ना कोई विद्या ना कोई ज्ञान ना कोई ध्यान ना कोई अक्खर ना कोई रसना ना कोई जेहवा ना कोई बत्ती दन्द सलाह सिफ्त करदा, लिखण पढ़न दा खैहड़ा जाए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर मूरत धरया ध्यान इक्क, जिस एकँकार दित्ती वडयाईआ। उह बिना सुरती

बिना शब्द दी धार धार विच्च गिआ टिक, मन मनसा ना कोई हलकाईआ। उह उस दा बणया प्यारा ते उस दा बणया सिख, जिस नूं गोबिन्द कहे मेरा धुर दा माहीआ। उहदा इक्को परमात्म ते इक्को पित, पतिपरमेश्वर विच्च समाईआ। वाशना विशिआं वाली लए जित्त, हार दा लेखा रहे ना राईआ। जिस सतिगुर दे ध्यान नूं लाउँदे गए कित, कोटन कोट अक्खी मीट मूधे हो के वेख वखाईआ। उस प्रभू दा उस साहिब दा परवरदिगार सांझे यार बेऐब नूर अलाह बेपरवाह पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दा रूप जगत अनडिठ, जग नेत्र लोचन नैण अक्खीआं दो वाले वेखण कदे ना पाईआ । जिंनां नूं किरपा करे मेरा दीन दयाला पुरख अकाला अन्तर आत्म सच प्रीती विच्च बख्श के हित्त, हितकारी हो के आपणा रंग रंगाईआ। उह सच स्वामी अन्तरजामी घट निवासी पुरख अबिनाशी काया मन्दर अंदर वसे हो अबिनाशी अचुत, चेतन्न सभ नूं दए कराईआ। सतिगुर मूरत सदा सुहञ्जणी रुत, जिस रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। बिना प्रभू दी किरपा तों ध्यान धरया ना जाए विच्च काया बुत्त, काअबे सारे रोवण मारन धाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, धुर मालक पुरख अकाला दीन दयाला दयानिध ठाकर इक्को इक्क अखवाईआ।

सतिगुर मूरत सतिगुर सूरत बड़ी मुशकल लभ्भदी, लभ्भ लभ्भ थक्की जगत लोकाईआ। उह खेल अगम्मे रब्ब दी, जो नूर नुराना धुरदरगाहीआ। उहदी कोई काया नहीं वड्डे छोटे कद्द दी, कुदरत दा मालक इक्क अखवाईआ। उह वढुयां टुक्कयां नहीं बधदी, कतलगाह विच्च कतल ना कोई कराईआ। उह बुद्धि नहीं किसे शर्म हया लज दी, लज्जया विच्च कदे ना आईआ। उह जुग चौकड़ी लख चुरासी अंदर फबदी, घर घर अंदर डेरा लाईआ। उह भरी नाम खुमारी मध दी, मधुर धुन दए सुणाईआ। उह सूरत बिन उस दी किरपा तों किसे दे अंदर जोत हो ना जगदी, जागरत जोत ना कोई दरसाईआ। एह सृष्टी दृष्टी कलिजुग अन्तम सदी चौधवीं सारे वेखे साडी अंदरों भरी अग्ग दी, तृष्ना अगन ना कोई बुझाईआ। मन कल्पणा जगत तृष्ना नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप भज्जदी, भजन बन्दगी विच्च मन ना कोई टिकाईआ। किसे नूं मंज़ल मिली नहीं उप्पर शाह रग दी, नौं दवारयां थल्ले साध सन्त रोवन मारन धाहीआ। एह खेल सूरे सर्बग्ग दी, जो शहनशाह इक्क अखवाईआ। उह सूरत ओसे दी जिस दे नाल गुरमुखां दी आत्म प्यार विच्च फबदी, प्रेम विच्च बह के इके घर विच्च सोभा पाईआ। उह तूरत सुण उस दे शब्द अनादी नद दी, जो अनहद नाद सुणाईआ। जेहड़ी दो जहानां दी मंज़ल छड्डे हद्द दी, हदूद तों बाहर डेरा लाईआ। उथ्थे पवण जगत सुगंदी नहीं कोई वगदी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मेला लए मिलाईआ।

सतिगुर मूरत सभ तों चंगी, चंगी जगत सिफ्तां विच्च गाईआ । किसे ने बाहर वखाई नहीं कर के नंगी, बिना सतिगुरू तों सतिगुर दा भेव कोई ना पाईआ। एह लेखा एह दात बिना भगती तों किसे दवारिउँ मिलदी कदे नहीं मंगी, देण वाला नज़र कोई ना आईआ। सारे तक्को काया मन्दर अंदर तुहाढ्ढे पिच्छे बहादर जंगी, जो दिवस रैण करन लड़ाईआ।

तुहानूं जगत कामना जगत वासना सभ नूं दिती तंगी, तंगदस्त होए लोकाईआ। जिन्हां दी तन वजूद माटी ख़ाक मेरे सतिगुर नानक गोबिन्द आपणे प्रेम प्यार नाल रंगी, रंगत धुर दी दित्ती चढ़ाईआ। ओथ्थे करेगा की फरंगी, गुरमुख बैठे डेरा लाईआ। जिन्हां दा तेज़ वधणा विच्च वरभंडी, ब्रह्मण्ड वेखण ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तक्कण गुरू गोबिन्द दी संधी, जो माछूवाड़े पुरख अकाल नाल कराईआ। बेशक सारी सृष्टी दी आत्मा हो जाए रंडी, मेरा सिख सुहागी प्रभू तेरा इक्को कन्त दा कन्त सभ नूं नज़री आईआ। करद जिंनां चिर गोबिन्द दे शब्द दी सरीर अंदर खड़ग कटार फिरे ना चंडी, चंडालां अंदरों ना बाहर कढ्ढाईआ। ओन्हां चिर सतिगुर मूरत ध्यान विच्च कदे ना आवे बहुरंगी, सो बहु बिध आपणा खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा मालक इक्क अखवाईआ।

सतिगुर मूरत अगम्म अगम्मड़ी, अगम्म भेव खुल्हाईआ। जिस दी हड्ड मास नाड़ी ना कोई चमड़ी, चम्म दृष्टी विच्च ना कदे समाईआ। ना कोई माता पिता अम्मी अंमड़ी, जगत नाता ना कोई रखाईआ। ना कोई कीमत रखाए पैसा धेला दमड़ी, टकयां विच्च ना हट्ट विकाईआ। उह आदि पुरख दी धार कदे ना जन्म दी, जन्म जन्म सभ दे सुफल कराईआ। जिन्हां उत्ते किरपा कीती सतिगुर भेव खुल्हाए ब्रह्म दी, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाईआ। उन्हां वासना रहे ना मन दी, मनुआ उठ ना दह दिश धाहीआ ।उन्हां दे अंदर सूरत आवे मेरे उस साहिब सतिगुर गोबिन्द सूरे चन्न दी, जिस चन्द सितार दा निशान सदी चौधवीं अन्त देणा मिटाईआ। उहदी सूरत होणी अन्तम श्री भगवन दी, जो सम्बल बह के आपणा खेल खलाईआ। उस दी वड्डिआई जन भगतो गुरमुखो होणी धन्न धन्न दी, धन्न धन्न धन्न करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सच दा मालक ख़लक दा ख़ालक आदि पुरख अपरम्पर स्वामी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एकँकार इक्क इकल्ला वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, दरगाह साची मुकामे हक़ जो वेखणहारा लोक परलोक दीन दुनी हरिजन हरिभगत गुरसिख आप आप आप आपणी दया कमाईआ। (२३ १८०)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

धरनी कहे जन भगत मेरे उत्ते खुशी मनाउणगे। घर उजड़े फेर वसाउणगे। महाराज शेर सिँघ दा फोटू आपणे अंदर इक्क इक्क रखाउणगे। पूरब जन्म दी सिक, सिक आपणे विच्च टिकाउणगे। इष्ट देव मन्न के इक्क, इक्को ओट रखाउणगे। दर्शन कर के नित, नेत्र लोचन नैण खुशी बिघसाउणगे। किरपा करे परमेश्वर पित, पतिपरमेश्वर जन इक्क ध्यान रखाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दे हुक्म विच्च हुक्म मनाउणगे। (२३—६७८)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि मूरत अकाल, अकाल पुरख अकाला। सतिगुर पुरख दयाल, दीनां बंधप दीन दयाला। पंज तत्त ना दिसे खाल, जोती नूर इक्क उजाला। ना कोई मन्दर ना धर्मसाल, ना कोई दिसे शिवदवाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट होए गुर गोपाला।

मूरत अकाल आदि निरञ्जण, अलक्ख अगम्म अपारा। आप आपणा बणया सज्जण, आप आपणा लए अवतारा। आप आपणा करया मज़न, आप आपणा मीत मुरारा। आप आपणा चलाए जहाज़न, आपे आप होए असवारा। आप आपणा रचया काजन, आप आपणा काज सवारा। आप आपणा बणया राजन, आप सुहाए बंक दवारा। आप आपणे चढ़या ताजन, आप आपणा करे शंगारा। आप आपणी मारे वाजन, आप आपणा शब्द करे जैकारा। आप आपणी रक्खे लाजन, आप आपणा होए पहिरेदारा। आपे आप ग़रीब निवाजन, आपणा आप होए रखवारा। आप आपणा रचिआ काजन, घर साचा सोहे इक्क दवारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल अपर अपारा।

अकाल मूरत हरि भगवन्ता, भगवन रूप समाया । आपे आदि आपे अन्ता, आदि अन्त आप अखवाया। आपे नारी आपे कन्ता, आप आपणी सेज हंढाया। आपे जीव आपे जंता, जीव जंता आप अखवाया। आपे महिमा जाणे अगणता, आप आपणा लेख लिखाया। आपे हउमे आपे हंगता, आपे गढ़ तुड़ाया। आपे भुक्खा आपे मंगता, आपे मंगण आया। आपे काया आपे चोली रंगता, आपे रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती नूर करे रुशनाया।

जोत कला हरि गोबिन्दा, परम पुरख समाणा। आप आपणी उपजाए बिन्दा, आप आपणे विच्च टिकाणा। आपे सागर आपे सिंधा, आपे ताल सुहाना। आपे गाए आपे करे निंदा, आपे भाग लगाणा । आपे होए हरि बख़शिंदा, आप आपणी दया कमाना। आपे मेटणहारा चिन्दा, आपे राग अलाणा। आपे ब्रह्मा शिव आपे इन्दा, सुरपत राजा आप अखवाणा। आपे दाता गुणी गहिंदा, आपे गुर गुर रूप सुहाणा। आपे मारणहारा जिंदा, आपे खोल वखाणा। आपे साचे धाम बहिंदा, थिर घर आप सुहाणा। आपे लेखा लेख लिखंदा, आपे मेट मिटाणा। आपे लहणा देणा दिन्दा, आपे मूल चुकाणा। आपे रसना आपे नाउँ कहिंदा, कह कह आप सुणाणा। आपे आपणे नाल खहिंदा, आपे युध कराणा। आपे उतर पूरब पच्छिम दक्खण चढ़दा होए लहिंदा, दक्खण पहाड़ आप सुहाणा। आपे भाणा आपणा सहिंदा, आपणा भाणा हत्थ रखाणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे वसे आप टिकाणा।

अकाल मूरत पुरख अबिनाशा, आपे आप अखवाया। आपणा वेखे आप तमाशा, वेखणहार आप हो जाया। आपे जोती नूर करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर आप अखवाया। आपे पृथ्मी आपे आकाशा, गगन पताल आप अखवाया। आपे मण्डल आपे रासा, चन्द सूरज आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा नूर वखाया।

पुरख अकाल बोध अगाधा, अगाध बोध समाया। आपे नाथ आपे अनाथा, दया नाथ आप अखवाया। आपे राम आपे दसराथा, रावण बावन आप अखवाया। आपे वेद आपे गाथा, आपे नाम अलाया। आपे पंज तत्त करया साथा, मन मत बुध आप अखवाया। आपे चढ़या आपणे राथा, रथ रथवाही आप हो जाया। आपे होए त्रिलोकी नाथा, आपे सगला संग निभाया। आपे सीस आपे मस्तक आपे माथा, आपे नैण जोत जगाया। आपे मुख आपे नक्क, आपे सरवण संग लगाया। आपे रंग आपे संग, आपे भुजां रिहा फैलाया। आपे गोदावरी आपे गंग, आपे अमृत धारा सिंध, आपे रिहा मुख चवाया। आपे रोग आपे सोग आपे हरख़ आपे चिन्द, आपे वेख वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर करे सवाया।

अकाल मूरत हरि रघुनाथा एका रंग रंगाया। आपे खेले खेल तमाश, खण्डा खड़क आप अखवाया। आपे भूप दासी दासा, सति सरूप आप अखवाया। आपे माई आपे मापा, आपे पिता पूत हो जाया। आपे आपणा थापन थापा, आपे आपणी गोद उठाया । आपे आप जपाए आपणा जापा, आपे अजपा जाप जपाया। आपे पुंन आपे पापा, तीनो तापा आप अखवाया। आपे इक्क इक्क अकांता, आपे एका एक लिव लाया। आपे दिवस आपे राता, घड़ी पल आप अखवाया। आपे ज़ात आप अज़ाता, ऊँच नीच आप अखवाया। आपे भैण आप भराता, साक सैण आप हो जाया। आप नारी कन्त सुहाता, आपे साची सेज हंढ़ाया। आपे देवणहारा दाता, आपणी झोली आप भराया। आपे होए नार कमज़ाता, नार दुहागण आप अखवाया। आपे वेखे मार झाका, अंदर बाहर आप हो जाया। आपे बणे आपणी बराता, आप आपणा लए परनाया । आपे सुणाए सुहागी छंता, मंगलाचार आप कराया। आपे जाणे आपणी गाथा, गावणहार आप अखवाया। आपे चढ़या आपणे राथा, आपणे मार्ग आपे लाया। आप निभाए आपणा साथा, साचा संग निभाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि जोती जोत जगाया।

अकाल मूरत अकल कल धारी, करता एका एक अखवाइंदा। आपे सोभा तन शंगारी, फूलनहार आप अखवाइंदा। आपे सिंचे तन क्यारी, आपे बीज पाइंदा। आपे लाए फल फुलवाड़ी, आपे रुत्त सुहाइंदा। आपे होए पिच्छे अगाड़ी, आपे मुख छुपाइंदा। आपे मुच्छ आपे दाढ़ी, आपे सीस कटाइंदा। आपे हाडी आपे नाड़ी, लहू मिझ आप अखवाइंदा। आपे माया आपे छाया अगनी तत्त आपे साड़ी, आपे अगन बुझाइंदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, आपे आसण लाइंदा। आपे वेखे सच अखाड़ी, आपे हत्थ उठाइंदा। आपे वेखे मंडप माड़ी, आपे अन्त मिटाइंदा। आपे मौत आपे लाड़ी, आपे घर घर फेरी पाइंदा। आपे होए पंचम धाड़ी, पंच विकार आप अखवाइंदा। आपे मन लाए उडारी, आपे बंध बंधाइंदा। आपे मत पाए सारी, मत मतवाला आप अखवाइंदा। आपे बुद्धि वेख विचारी, आपे बूझ बुझाइंदा। आपे लेखा लेख लिखारी, आपे मेट मिटाइंदा। आपे शब्द सच्ची जैकारी, आपे नाअरा लाइंदा। आपे धुन होए धुनकारी, अनाद अनादी इक्क वजाइंदा। आपे जोत होए निरँकारी, हर घट आपे आप टिकाइंदा। आपे बावन भेखा धारी, वल छल आप कराइंदा। आपे मोहण माधव

हरि गिरधारी, आपे गिरवर रूप समाइंदा। आप आपणी लाए यारी, आपे तोड़ वखाइंदा। आप आपणा होए दरबारी, दर दरबार आप सुहाइंदा। आपे करे घर सच असवारी, आपे आसण साचा लाइंदा। आपे मारी इक्क उडारी, आपे मूंह दे भार सुटाइंदा। आपे बंने आपणी धारी, आप आपणा वेख वखाइंदा। आपे एका एकँकारी, आपे ओअंकारा रूप सुहाइंदा। आपे नाम खण्डा तेज़ कटारी, आपे आपणे अंग कटाइंदा। आपे जोधा सूर बली बलकारी, आपे तीर कमान चलाइंदा। आपे गढ़ आपे हँकारी, आपे भन्न वखाइंदा। आपे लड़ बन्ने संसारी, आपे तोड़ वखाइंदा। आपे वेखे चढ़ उच्च अटारी, आपे कीटां विच्च समाइंदा। आपे महिमा जाणे अपारी, आप आपणा वेख वखाइंदा। अकाल मूरत मूरत इक्क त्यारी, एका रूप समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक अखवाइंदा।

अकाल मूरत एका पूजा, एका रूप समाया। ना कोई मिसरी ना कोई कूजा, ना कोई भेट चढ़ाया। ना कोई चेला गुरू दिसे दूजा, ना कोई दर खुल्हाया। ना कोई भेव खुल्हाए गूझा, ना कोई पड़दा पाया। ना कोई जगत शहीदी झूझा, ना कोई सीस कटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेख वखाया।

अकाल मूरत अनक कल धारी, नैनन नैण समाया। आपे वेद शास्त्र आपे पुरान पुजारी, आपे हवन कराया। आपे खेले खेल खिलारी, खेलणहार आप अखवाया। आपे उत्भुज सेतज जेरज अंड हो जाया। आपे परबत आप पहाड़ी, सागर सिंध आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणी वंड वंडाया।

अकाल मूरत हरि पाए वंडा, आपणी वंड वंडाईआ। आप उपाए हरि ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्डा विच्च समाईआ। आपे जाणे आपणा कन्ढा, आपे लिआ उपाईआ। आपे सुहागी आपे रंडा, आपे स्वांग वरताईआ। आपे तत्ता आपे ठंडा, सांतक रूप आप हो जाईआ। आपे होए खण्ड खण्डा, आपे आपणी वंड वंडाईआ। आपे भेख आपे पखण्डा, आपे दए मिटाईआ। आपे तेज़ कटारी खण्डा, आप आपणे हत्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती नूर डगमगाईआ।

जोती नूर हरि निरँकारा, निरवैर रूप अखवाया। आप आपणी बंने धारा, आपणा शब्द चलाया। शब्द सुत अपर अपारा, साचा मार्ग लाया। लोआं पुरीआं कर पसारा, आपणा वेख वखाया। धरत धवल दए सहारा, अकाश प्रकाश समाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया आपणी भिच्छया आपणी झोली पाया।
(०७–५२ ५४)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि मूरत जन वेख, सर्ब अकार है। हरि मूरत जन वेख, सर्ब अधार है। हरि मूरत जन वेख, रूप अगम्म अपार है। हरि मूरत जन वेख, वेखण सुनण सुनण वेखण

सद वसे बाहर है। हरि मूरत जन वेख, ना कोई रूप ना कोई रंग अव्वलड़ी धार है। हरि मूरत जन वेख, आत्म घर साची मेख, जगे जोत निरगुण हार है। हरि मूरत जन वेख, भरम भुलेखा दए निवार है। हरि मूरत जन वेख, मानस जन्म आदि अन्त रिहा सवार है। हरि मूरत जन वेख, काम क्रोध करे भसमंत, मारे शब्द कटार है। हरि मूरत जन वेख, जोत जगाए साचे सन्त, अमृत देवे साची धार है। हरि मूरत जन वेख, एका रंग हरि साचे अन्त ना पावे कोई जंत गवार है। हरि मूरत जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, लक्ख चुरासी पसर पसार है।

हरि मूरत जन वेख, जोत अकाल है। हरि मूरत जन वेख, मातलोक ना होए कदे कंगाल है। हरि मूरत जन वेख, देवे दात शब्द वड्ड धन माल है। हरि मूरत जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, कर रिहा सर्ब प्रितपाल है।

हरि रंग जन वेख, रसना रस हरि साचा नाउँ लीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ अबिनाशी होए वस, जन भगतां रहे अद्धीन है। हरि रंग जन वेख, प्रभ मारे शब्द खण्डा, भन्ने हँकारी बीन है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, एका राह जगत दिखाए, चार वरनां एका थां बहाए, ना कोई होर बणाए दूजा दीन है।

हरि रंग जन वेख, जगत वड्डिआई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, साची जोत विच टिकाई है। हरि रंग जन वेख, अठ्ठे पहिर प्रभ एका जोत जगाई है। हरि रंग जन वेख, अज्ञान अन्धेर दए मिटाई है। हरि रंग जन वेख, जोती जोत सरूप हरि, पूरन बूझ रिहा बुझाई है।

हरि रंग जन वेख, रंग अनूप है। हरि रंग जन वेख, प्रभ दिसे सति सरूप है। हरि रंग जन वेख, मेल मिलावा हरि साचे शाहो भूप है। हरि रंग जन वेख, सृष्ट सबाई अन्तम कलिजुग चार कुण्ट होई अन्ध कूप है। हरि रंग जन वेख, मन भए अनन्दा। हरि रंग जन वेख, उतरे मन की झूठी चिन्दा। हरि रंग जन वेख, एका एक हरि राह वखाए दया कमाए, निज घर आत्म आप उपजाए, बणाए साची बिन्दा। जोती जोत सरूप हरि, सदा सदा जन भगतां आप बख्शंदा।

हरि का रूप अगम्म, शब्द अमोल है। हरि का रूप अगम्म, सृष्ट सबाई एका ब्रह्म, पूरे तोल रिहा तोल है। लक्ख चुरासी पई भरम, अन्तम कलिजुग रही डोल है। काया माटी झूठा चाम, सच वस्त ना किसे कोल है। अन्तम बाहर होणे दम, झूठा रहणा काया ढोल है। जोती जोत सरूप हरि, जन भगतां लए रखाए दया कमाए, लक्ख चुरासी रही अनभोल है। (७ हाढ़ २०११ बिक्रमी)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि का रूप अगम्म, खेल अपारया। हरि का रूप अगम्म, जोत निरंकारया। हरि का रूप अगम्म, भेव नयारया। हरि का रूप अगम्म, देवी देव ना पाए सारया। हरि का रूप अगम्म, ब्रह्मा ब्रह्मपुरी जोत जगा रिहा। हरि का रूप अगम्म, शिव शंकर जटा जूट धार साची सेवा ला रिहा। हरि का रूप अगम्म, सुरपत राजा इन्द करोड़ तेतीसा अमृत फल इक्क खवा रिहा। हरि का रूप अगम्म, ना कोई हड्ड मास नाड़ी चंम, एका जोती शब्द अधारया। हरि का रूप अगम्म, पवण उनंजा दर खलोती, तिन्नां लोआं दर खुल्ला रिहा। हरि का रूप अगम्म, मंगदे रहण कोटन कोटी, दिस किसे ना आ रिहा। हरि का रूप अगम्म, ना कोई खाए पीए रोटी, इक्क अधार रखा रिहा। हरि का रूप अगम्म, हरि का शब्द रखाए सोटी, लोआं पुरीआं धार बन्ना रिहा। हरि का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी वेखे परखे आत्म नीती खोटी, शब्द जोती मेल मिला रिहा। हरि का रूप अगम्म, कदे ना आवे कोई तोटी, गुरमुख साचे आत्म झोली हरि भरा रिहा। साची जोत जगाए काया मण्डल चोटी, धूंआं धार सर्ब मिटा रिहा। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त, लोकमात मार झात, भाणा आपणे हत्थ रखा रिहा।

हरि का रूप अगम्म, बेपरवाह है। हरि का रूप अगम्म, ना जाणे कोई सच्चा थां है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पिता ना कोई मां है। हरि का रूप अगम्म, पवण स्वासी ठंडी छाँ है। हरि का रूप अगम्म, लक्ख चुरासी करे दासी, ना करे कोई नांह है। हरि का रूप अगम्म, तिन्नां लोआं फासी, ब्रह्मे आई अन्तम उदासी, शिव शंकर मिटे लोकमात घर घर उडाए कां है। करोड़ तेतीसा सुरपत राजा इन्दा जोत जगिंदा, जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, साची जोत करे अकार है।

हरि का रूप अगम्म, निर आकार है। हरि का रूप अगम्म, पवण सरूपी शब्द असवार है। हरि का रूप अगम्म, चौदां हट्टां तीर्थ तट्टां करे वणज वपार है। हरि का रूप अगम्म, आत्म जोती जगे लट लटां, ना होए अन्ध अंधिआर है। एका खेल बाजीगर नटां, साचा शब्द सच्ची धुनकार है। जोती जोत सरूप हरि, आत्म साचे सर सरोवर भरया इक्क भंडार है।

हरि का रूप अगम्म, शब्द भंडारया। हरि का रूप अगम्म, तिन्नां लोआं पावे सार है। अवर ना जाणे जीव कोईआ, गुर पीर लभ्भ लभ्भ थक्के हार है। कवण सिँघासण हरि जी सोया, ना कोई जाणे राजा राणा। पुरख अबिनाशी ना जन्मे ना कदे मोया, आपे चले आपणा भाणा। जोती जोत सरूप हरि, लोकमात हरि जोत धर, करे खेल अन्तम अन्त बेमुहानया।

हरि का रूप अगम्म, बेमुहाण है। हरि का रूप अगम्म, गुणवन्त गुण निधान है। हरि का रूप अगम्म, राज राजाना शाह सुल्ताना एका रक्खे विच्च जहान है। हरि का रूप अगम्म, साध सन्त ना सके कोई पछाण है। हरि का रूप अगम्म, शब्द रक्खे सच्चा

बाण है। हरि का रूप अगम्म, अठ्ठे पहिर नौजवान है। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, साचा छत्तर एका सीस झुलान है।

हरि का रूप अगम्म, अलखणा अलक्ख है। हरि का रूप अगम्म, जोती जामा धारे भेख है। हरि का रूप अगम्म, ना कोई जाणे औलीआ पीर शेख़ है। हरि का रूप अगम्म, किसे हत्थ ना लोकमात साची रेख है। हरि का रूप अगम्म, खण्ड मण्डल वरभंड रिहा वेख है। जोती जोत सरूप हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त एका दात एका एक है।

हरि का रूप अगम्म, शब्द उडार है। हरि का रूप अगम्म, पवण असवार है। हरि का रूप अगम्म, जीआं जंतां सर्ब भतार है। हरि का रूप अगम्म, साधां सन्तां बन्ने धार है। हरि का रूप अगम्म, साची बणत बणाइंदा। (२६ पोह २०११ बिक्रमी)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि मूरत अकाल, नूर नुरंतिआ। हरि मूरत अकाल, जोत भगवंतिआ। हरि मूरत अकाल सच धाम रहंतिआ। हरि मूरत अकाल, इक्क अकार त्रै लोआं रखंतिआ। हरि मूरत अकाल, ना कोई जाणे जीव जंत गवार, भरम भुलाए साधन संतिआ। हरि मूरत अकाल, गुरूआं पीरां मार कलिजुग तेरी अन्तम वार, दूसर दर ना कोई वखंतिआ। हरि मूरत अकाल, इक्क हरि सच्ची सरकार, चार वरन एका सरन रखंतिआ। हरि मूरत अकाल, अठ्ठे पहिर ख़बरदार, हरि मूरत अकाल, ना कोई पावे सार, हरि नरायण सहज सुखवंतिआ। हरि मूरत अकाल, आप नुहाए एका साचे ताल, सति सरोवर इक्क इशनान करन्तया। हरि मूरत अकाल, जन भगतां करे प्रितपाल, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका एक जन भगत टेक आदिन अंतिआ।

हरि मूरत अकाल, इक्क ओअंकार है। हरि मूरत अकाल, शब्द साची धार है। हरि मूरत अकाल, पवण स्वासी घट घट वासी, जीआं जंतां पाए सार है। हरि मूरत अकाल, मानस जन्म करे रहिरासी, आप कटाए जम की फासी, गुरमुखां रिहा सुरत संभाल है। हरि मूरत अकाल, गुरमुख बणाए शब्द स्वासी, आत्म जोत करे प्रकाशी, आत्म दीपक कर उजिआर है। जोती जोत सरूप हरि, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एका वसे सद बाहर है। (११ माघ २०११ बिक्रमी)

☆ ☆ ☆ ☆ ☆

हरि रूप अगम्म अपार, ना किसे विचारया। हरि रूप अगम्म अपार, लक्ख चुरासी विच्च पसारया। हरि रूप अगम्म अपार, आत्म ब्रह्म पारब्रह्म रंग अपर अपारया। हरि का रूप अगम्म, एका नाम सच धरम, धरनी धर आप अखवा रिहा। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे विच्च समा रिहा।

हरि का रूप अगम्म, शब्द जणाईआ। हरि का रूप अगम्म, ब्रह्म विद्या ब्रह्मा एका पाईआ। हरि का रूप अगम्म, हड्ड मास नाड़ी ना कोई चंम, आदि जुगादि वसे सर्ब थाईंआ। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पवण स्वासी दम, ना कोई खाए पीए तम, इक्क अधारा हरि रखाईआ। हरि का रूप अगम्म, ना नीर वहाए छंम छंम, अमृत धार इक्क वहाईआ। हरि का रूप अगम्म, ना मरे ना पए जम्म, पुरख अबिनाशी घट घट वासी सृष्ट सबाई सर्ब पित माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपे जाणे आपणी वडयाईआ।

हरि का रूप अगम्म, आप उपंनया । हरि का रूप अगम्म, गुरमुख विरले मात मन्नया। हरि का रूप अगम्म, तारा मण्डल ना जाणे सूरज चंनया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणे वसे घर, दर दवारे गुरमुख साचा एका एक बन्नुया।

हरि का रूप अगम्म, दरस अनेकिआ। हरि का रूप अगम्म, शिव शंकर रक्खे टेकिआ। हरि का रूप अगम्म, ईड़ा पिंगल ऐड़ा अंकर निरगुण सरगुण करे बुध बिबेकिआ। हरि का रूप अगम्म, जोती जोत सरूप हरि, नेत्र नैण लोचन गुरसिख विरले मात वेख्या।

हरि का रूप अगम्म, रंग चलूलया। हरि का रूप अगम्म, वड दाता दूलो दूलिआ। हरि का रूप अगम्म, जन भगतां बंधाए चरन नाता, आदि अन्त कदे ना भूलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई रक्खे जात पाता, शब्द रक्खे नाम त्रिसूलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई पिता ना कोई माता, ऊँचो ऊँच कन्त कन्तूहलया। हरि का रूप अगम्म, ना कोई संञ सवेर अन्धेरी राता, आपे फल्लया आपे फूलया। हरि का रूप अगम्म, सदा वसे इक्क इकांता, आपे झूले सच सिँघासण साचे झूलया। जोती जोत सरूप हरि, गुरमुखां देवे अमृत आत्म बूंद स्वांता, सोहँ शब्द दर दवारे जो जन आए बोलया। (१ हाढ़ २०१२ बि)